P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद गाजीपुर (उ0प्र0) के अवस्थापनात्मक विकास और ग्रामीण विकास का अन्तर्सम्बन्ध : एक भौगोलिक अध्ययन

अशोक कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
श्रीमती काली देवी
महाविद्यालय, भगनें
भगवानपुरी, चौरी चौरा,
गोरखपुर (उ.प्र.) भारत

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
पीपीगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)
भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में अवस्थापनात्मक विकास एवं ग्रामीण विकास के अन्तर्सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम अवस्थापना तत्वों का संकल्पनात्मक अध्ययन किया गया है। इसके पश्चात अवस्थापनात्मक विकास के समन्वित स्तर को ज्ञात करने के लिए चयनित संकेतकों के मूल्यों को जोड़कर अवस्थापनात्मक विकास स्तर ज्ञात किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि अवस्थापनात्मक विकास का उच्च स्तर भी अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती और उत्तरी भागों में मिलता है। जबकि दक्षिणी–पूर्वी और दक्षिणी पश्चिमी भागों में अवस्थापनात्मक विकास अपेक्षाकृत निम्न है। इसके बाद समन्वित ग्रामीण विकास और ग्रामीण विकास के विभिन्न प्रखण्डों में अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण सहसम्बन्ध गुणांक और प्रकीर्ण आरेख के माध्यम से किया गया है। प्रकीर्ण आरेख पर समन्वित ग्रामीण विकास और कृषि विकास का प्रदर्शन धनात्मक और ऋणात्मक मूल्यों के आधार पर किया गया है। दोनों चरों में सहसम्बन्ध +.847 है। इसी तरह से कृष्येत्तर विकास और ग्रामीण विकास का प्रदर्शन धनात्मक और ऋणात्मक मूल्यों के सन्दर्भ में प्रकीर्ण आरेख पर किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों में सहसम्बन्ध गुणांक +.841 है और क्षेत्रीय प्रतिरूप के सन्दर्भ में कृषि विकास और कृष्येत्तर विकास तथा समन्वित ग्रामीण विकास में क्षेत्रीय समानता मिलती है। पुनः अवस्थापनात्मक विकास और कृषि विकास कृष्येत्तर विकास तथा समन्वित ग्रामीण विकास में अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण प्रकीर्ण आरेख पर धनात्मक और ऋणात्मक मूल्यों के आधार पर किया गया है। मूल्यों के वितरण के आधार पर अन्तर्सम्बन्धों का क्षेत्रीय प्रतिरूप ज्ञात किया गया है। अन्त में अवस्थापनात्मक विकास और समन्वित ग्रामीण विकास के बीच सहसम्बन्धों का विश्लेषण प्रकीर्ण आरेख के आधार पर किया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में अवस्थापना विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में धनात्मक सहसम्बन्ध है और दोनों के वितरण में क्षेत्रीय प्रतिरूप भी लगभग एक समान मिलता है।

मुख्य शब्द : समन्वित ग्रामीण विकास, विभिन्न प्रखण्ड, प्रकीर्ण आरेख, कृष्येत्तर विकास, ऋणात्मक मूल्य, परिवर्तनशील स्तर, कृषि व्यापारीकरण, बाजार का विकास, मण्डी केन्द्र, बहुआयामी अवधारणा, बहुमुखी विकास ।

प्रस्तावना

अवस्थापना तत्व मानव निर्मित ऐसे तथ्य हैं जो मनुष्य और संसाधनों के बीच अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध उत्पन्न करके उत्पादन को गतिशील करते हैं। किसी भी क्षेत्र में मानव जनसंख्या और विभिन्न संसाधनों के अन्तर्सम्बन्ध का परिणाम सामाजिक–आर्थिक विकास होता है।[1] मानव जीवन का लक्ष्य यही है। जब से मनुष्य पैदा हुआ, तब से वह अपने अस्तित्व के लिए विभिन्न संसाधनों की खोज करने लगा। इस प्रक्रिया में संसाधनों का उपयोग करने के लिए वह अनेक उपायों और तकनीकों की भी खोज करने लगा। इन्हीं उपायों और तकनीकों का मूर्त स्वरूप अवस्थापना तत्व है। अवस्थापना तत्व की विकास प्रक्रिया मानवीय सभ्यता के विकास से जुड़ी हुयी है।[2] विभिन्न मानव समाज अपनी आवश्यकता के अनुसार उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अवस्थापना तत्वों का निर्माण करते हैं। इस तरह क्षेत्रीय रूप में अवस्थापना विकास और संसाधनों का शोषण अलग–अलग घटित होते हैं। इसीलिए एक विशिष्ट और जटिल संरचनात्मक समाज वाले क्षेत्रों में अवस्थापना तत्वों की विविधता और जटिलता पायी जाती है[3] क्योंकि विकसित समाज में मनुष्यों की अनेक आवश्यकताएं मिलती हैं जिनको पूरा करने के लिए उसी प्रकार के अवस्थापना तत्वों का विकास किया जाता है। जब पिछड़े समाज वाले क्षेत्रों मे

कम अवस्थापना विविधता मिलती है और ऐसे अवस्थापना तत्व क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण और पर्यावरण से प्रभावित होते हैं, अर्थतन्त्र के विभिन्न प्रखण्डों कृषि, उद्योग आदि के परिवर्तनशील स्तर के अनुसार अवस्थापना तत्व भी परिवर्तित होते जाते हैं।[4] वास्तव में अवस्थापना तत्व मनुष्य अपने कार्यों की लागत कम करने और सुविधायुक्त बनाने के लिए उनका विकास करता है। जैसे परम्परागत कृषि व्यवस्था वाले समाज में प्राथमिक रूप में घरेलू स्तर पर ही बीज भण्डारण, अनाज भण्डारण के केन्द्र, सिंचाई के लिए तालाबों और कुओं का विकास तथा कृषि उत्पादनों के विनिमय के लिए आवर्ती बाजार केन्द्र भी विकसित किये गये लेकिन जब कृषि व्यवस्था धीरे–2 विकसित होने लगी, तो सिंचाई के लिए नहरों का विकास नलकूप, बीजगोदाम, बाजार केन्द्र और सड़कों का विकास तेजी से होने लगा। इसके बाद और अधिक कृषि विकास और कृषि के व्यापारीकरण हेतु बाजार का विकास मण्डी केन्द्र, गोदामों, शीत गृहों का विकास, कृषि यन्त्रों के मरम्मत केन्द्र, निर्माण केन्द्र आदि का विकास हुआ। इसी तरह औद्योगिक विकास प्रक्रिया में खनन केन्द्र, औद्योगिक केन्द्र, तकनीकी और प्रशिक्षण संस्थान, परिवहन के साधन, विभिन्न प्रकार के गोदाम, और बैंको का विकास किया गया। इस तरह स्पष्ट होता है, मनुष्य अपने सामाजिक–आर्थिक कार्यों का विकास करने के लिए ही अवस्थापना विकास करता है। सामाजिक कार्यो की पूर्ति के लिए वह शिक्षा, स्वास्थ्य, जैसी आवश्यकताओं के लिए अस्पताल, मेडिकल कालेज प्राथमिक विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा संस्थान तक विकसित करता है। समग्र रूप में ऐसे सभी आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी तथ्य मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, क्योंकि ये तत्व संसाधनों की शोषण प्रक्रिया को आसान बनाते हैं।[5] जिससे मनुष्य विभिन्न संसाधनों के आधार पर उत्पादन करके अपने लक्ष्यों की पूर्ति करता है। इस तरह अवस्थापना तत्वों का निर्माण करता है। संसाधनों के शोषण में उनका उपयोग भी करता है और उपयोग के द्वारा उसकी उत्पादन प्रक्रिया लागत घट जाती है। जिससे मनुष्य अन्य प्राणियों की तरह से कम लागत और कम समय में अपनी आवश्यकता को पूरा कर लेता है।

ग्रामीण विकास एक सतत प्रक्रिया है। भारत में इसका तात्पर्य गरीबी उन्मूलन से है। इस प्रकार ग्रामीण विकास गावों में रहने वाले लोगों के जीवन स्तर के उत्थान का एक चैतन्य प्रयास है। विकास को संकीर्ण आर्थिक विकास के रूप में नहीं समझना चाहिए। यह ग्रामीण क्षेत्र के सम्पूर्ण तन्त्र में गुणात्मक सुधार के रूप में जाना जाता है। ग्रामीण विकास एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें ग्रामीण विकास के विभिन्न पक्षों में धनात्मक रूपान्तरण एवं पारस्परिक समन्वयन सम्मिलित रहता है। ग्रामीण विकास एक भौगोलिक अध्ययन का विषय है। राव (1964)[6] ने भी अपनी पुस्तक 'ग्रामीण विकास एवं नगरीकरण' में ग्रामीण विकास के लिए बुनियादी सुविधाओं के विकास तथा अवस्थापना सुविधाओं के सुदृढ़ जाल पर विशेष बल दिया है। अरोरा (1979)[7] के अनुसार ग्रामीण विकास का अर्थ स्थानीय संसाधनों (मानव, पदार्थ, भूमि एवं जल) का आदर्शतम उपयोग करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था का बहुमुखी विकास करना है। मिश्रा एवं सुन्दरम् (1980)[8] के अनुसार ग्रामीण विकास विकेन्द्रित नियोजन एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। एल0आर0सिंह (1986)[9] के अनुसार ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्र का उसके सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के परिप्रेक्ष्य में समन्वित विकास है। बसन्त देसाई (1988)[10] ने ग्रामीण विकास पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनकी पुस्तक ग्रामीण विकास छः खण्डो में प्रकाशित हुई। ग्रामीण विकास का प्रथम खण्ड उद्देश्य एवं समस्याओं से सम्बन्धित है। द्वितीय खण्ड कार्यक्रम और सामाजीकरण से सम्बन्धित है। तीसरा खण्ड संगठन और प्रबन्धन से सम्बन्धित है। पाँचवे खण्ड में योजनाओं के द्वारा ग्रामीण विकास का उल्लेख हुआ है। अन्तिम और छठें खण्ड की सातवीं योजना में ग्रामीण विकास का अध्ययन हुआ है। इनमें से प्रथम दो खण्ड ग्रामीण विकास के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अवस्थापना तत्वों का चयन

प्रस्तुत अध्ययन में अवस्थापना विकास स्तर ज्ञात करने के लिए सामाजिक–आर्थिक विकास के निम्नलिखित अवस्थापनात्मक तत्वों का चयन किया गया है–

1. प्रति दस हजार जनसंख्या पर बैंको की संख्या
2. प्रति दस हजार जनसंख्या पर सरकारी समितियाँ
3. प्रति दस हजार जनसंख्या पर बीज गोदामों की संख्या
4. प्रति दस हजार जनसंख्या पर उर्वरक केन्द्रों की संख्या
5. प्रति दस हजार जनसंख्या पर कीटनाशक केन्द्रों की संख्या
6. नहरों की लम्बाई किलोमीटर में
7. नलकूपों की संख्या
8. प्रति लाख जनसंख्या पर अस्पतालों की संख्या
9. प्रति लाख जनसंख्या पर शैयाओं की संख्या
10. प्रति पचास वर्ग किलोमीटर पर परिवहन केन्द्र
11. प्रति पचास वर्ग किलोमीटर पर डाक एवं तार घर
12. प्रति लाख जनसंख्या पर प्राथमिक स्कूलों की संख्या
13. प्रति लाख जनसंख्या पर जूनियर स्कूलों की संख्या
14. विद्युतीकृत ग्रामों का प्रतिशत
15. प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की लम्बाई किलोमीटर में (तालिका सं0–1)

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

तालिका सं0 – 1
अवस्थापना विकास के संकेतक – 2014

क्र.सं.	विकास खण्ड	प्रति 10000 जनसंख्या पर बैंकों की संख्या		प्रति 10000 जनसंख्या पर सहकारी समितियाँ		प्रति 10000 जनसंख्या पर बीज गोदामों की संख्या		प्रति 1000 जनसंख्या पर उर्वरक केन्द्र		प्रति 10000 जनसंख्या पर कीटनाशक केन्द्र		नहरों की लम्बाई किमी0 में		नलकूपों की संख्या		प्रति लाख जनसंख्या पर अस्पताल	
		सं0	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर	किमी.	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर	सं0	Z स्कोर
1	जखनिया	8	+1.25	12	+0.21	17	0.56	15	0.21	14	00	92	0.01	42	0.41	2.1	0.91
2	मनिहारी	8	+1.25	14	+0.90	17	0.56	16	0.63	15	0.31	125	0.57	36	0.64	3.2	0.98
3	सादात	7	+0.80	7	-1.51	11	1.24	11	1.46	9	1.56	53	0.72	25	1.06	2.2	0.74
4	सैदपुर	8	+1.25	6	-1.86	11	1.24	10	1.88	11	0.94	100	0.12	77	0.92	2.9	0.46
5	देवकली	9	+1.19	12	+0.20	16	0.20	15	0.21	14	00	89	0.07	80	1.03	3.1	0.81
6	विरनो	5	-0.80	10	-0.48	15	0.04	15	0.21	18	1.25	83	0.18	31	0.83	2.2	0.74
7	मरदह	5	-0.80	11	-0.13	15	0.04	16	0.63	15	0.31	117	0.43	24	1.10	2.5	0.22
8	गाजीपुर	5	-0.80	13	+0.56	15	0.04	18	1.46	14	00	57	0.65	87	1.30	3.5	1.58
9	करण्डा	5	-0.80	11	-0.13	14	0.04	13	0.63	12	0.63	60	0.60	66	0.50	3.5	1.58
10	कासिमाबाद	7	+0.80	17	1.94	22	2.04	14	0.21	19	1.56	99	0.10	28	0.95	2.0	1.08
11	वाराचवर	6	-0.36	13	0.56	17	0.56	17	1.04	16	0.63	112	0.34	46	0.26	3.1	0.81
12	मोहम्मदाबाद	8	+0.80	13	0.56	17	0.56	17	1.04	18	1.25	24	1.25	104	1.95	1.6	1.77
13	भावरकोल	8	+1.25	11	0.13	10	1.54	13	0.65	9	1.56	24	1.25	86	1.26	2.4	0.39
14	जमानिया	8	+1.25	15	1.25	21	1.76	18	1.46	18	1.25	52	2.08	20	1.25	1.9	1.25
15	रेवतीपुर	7	+1.25	9	0.82	12	0.94	12	1.04	11	094	41	0.94	58	0.14	3.3	1.15
16	भदौरा	6	+0.36	8	1.17	12	0.94	12	1.04	11	0.94	162	1.25	34	0.72	2.7	0.12

प्रयोग विधि

उपरोक्त अवस्थापना तत्वों का चयन विकास खण्ड के अनुसार निरपेक्ष रूप में किया गया है। अवस्थापनात्मक विकास स्तर ज्ञात करने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनायी गयी है

1. विकास खण्ड वार निरपेक्ष मूल्यों को जनसंख्या और क्षेत्रफल के सन्दर्भ में सापेक्षिक मूल्यों में परिवर्तित किया गया है।
2. विकास खण्ड वार प्रत्येक तत्वों के सापेक्षिक मूल्यों को Z मूल्यों में परिवर्तित किया गया है।
3. Z मूल्यों को धन और ऋण का ध्यान रख कर के कुल योग प्राप्त किया गया है।
4. कुल तत्वों के Z मूल्य का योग ही विकास खण्ड के अनुसार अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास स्तर को व्यक्त करता है।
5. कुल योग को देखने से स्पष्ट होता है कि अवस्थापनात्मक विकास स्तर 0 से + 8.50 तक और 0 से –5.69 तक है। इस तरह Z मूल्यों में 0 औसत होता है और धनात्मक रूप में अधिक प्रसार अपेक्षाकृत उच्च विकसित स्तर और ऋणात्मक प्रसार निम्न विकसित स्तर को व्यक्त करता है (तालिका सं0– 2)

तालिका सं0 – 2

समन्वित ग्रामीण विकास और अवस्थापनात्मक विकास – 2014

क्र.सं.	विकास खण्ड	समन्वित ग्रामीण विकास	अवस्थापनात्मक विकास
1	जखनिया	+ 0.86	+ 4.3
2	मनिहारी	+ 3.86	+ 8.1
3	सादात	+ 1.99	– 5.3
4	सैदपुर	0.25	– 0.22
5	देवकली	– 5.51	+ 5.96
6	विरनो	+ 8.09	– 1.10
7	मरदह	+ 5.47	+ 0.10
8	गाजीपुर	+ 12.28	+ 8.50
9	करण्डा	– 6.56	– 3.40
10	कासिमाबाद	+ 1.24	– 2.2
11	बाराचवर	+ 2.83	– 1.10
12	मोहम्मदाबाद	+ 6.88	+ 2.50
13	भावरकोल	– 6.93	+ 0.10
14	जमानिया	+ 3.42	+ 5.50
15	रेवतीपुर	– 13.74	– 5.69
16	भदौरा	– 11.12	– 2.10

उपरोक्त समन्वित Z मूल्यों के आधार पर क्षेत्रीय विकास प्रतिरूप को पाँच भागों में विभाजित किया गया है। इसमें +8.00 मूल्य सर्वोच्च स्तर को व्यक्त करता है, जो गाजीपुर जनपद के मनिहारी और गाजीपुर विकासखण्डों में पाया जाता है। (चित्र सं0–1) अवस्थापना विकास का उच्च स्तर +4.00 से +8.00 तक Z मूल्यों से व्यक्त होता है। इसके अन्तर्गत जखनियां और देवकली विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जबकि 0 से +4.00 तक के मूल्य मध्यम स्तरीय विकास को प्रदर्शित करते हैं। जिसमें मरदह, मोहम्मदाबाद और भावरकोल विकाखण्ड सम्मिलित हैं। Z मूल्य 0 से –4.00 तक निम्नस्तरीय विकास दिखाता है। इसके अन्तर्गत सैदपुर, विरनो, कासिमाबाद, बाराचवर, भदौरा और करण्डा विकास खण्ड सम्मिलित हैं। और –4. 00 से अधिक ऋण वाले Z मूल्य अति निम्न विकास स्तर को व्यक्त करते हैं। जिसमें सादात और रेवती पुर विकास खण्ड सम्मिलित हैं।

इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर में अवस्थापनात्मक विकास मध्यवर्ती भाग में अपेक्षाकृत अधिक हुआ है। इसमें गाजीपुर जिला मुख्यालय नगर केन्द्र है। उसके समीप मनिहारी, दक्षिण में जमानियां, पश्चिम में देवकली, उत्तर–पूर्व में मोहम्मदाबाद, मरदह आदि है। इन क्षेत्रों में गाजीपुर नगर से निकलने वाली सड़कें और वाराणसी गाजीपुर बलिया रेल मार्ग ने नोडल केन्द्रों की उत्पत्ति की है। इसके साथ ये सभी विकास खण्ड कृषिगत तथा कृष्येत्तर विकास में भी उच्च स्तर के हैं। इसीलिए इन क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास अधिक हुआ है, जबकि दक्षिण–पश्चिम, दक्षिण–पूर्व और उत्तर पूर्वी सीमावर्ती विकासखण्डों में विषम धरातलीय स्वरूप और विरल जनसंख्या के कारण अवस्थापना विकास निम्न स्तर का है।

अवस्थापनात्मक विकास स्तर और समन्वित ग्रामीण विकास में अन्तर्सम्बन्ध

गाजीपुर जैसे पिछड़े अर्थतन्त्र वाले क्षेत्रों में अर्थतन्त्र के विभिन्न प्रखण्डों के पिछड़े होने के कारण अवस्थापनात्मक विकास भी कम हुआ है। विगत अध्याय में समन्वित ग्रामीण विकास के आयामों कृषि और कृष्येत्तर

विकास का विश्लेषण करके उनके क्षेत्रीय प्रतिरूप को स्पष्ट किया गया है। इसीलिए प्रस्तुत अध्याय में सर्वप्रथम कृषि विकास, कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास स्तर तथा कृषि और कृष्येत्तर विकास स्तर के मध्य सहसम्बन्धों का विश्लेषण प्रकीर्ण आरेख सं0 2, 3 और 4 के माध्यम से किया गया है।

कृषि विकास स्तर और समन्वित ग्रामीण विकास में अन्तर्सम्बन्ध

चित्र सं0–.2 में प्रर्कीण आरेख के अन्तर्गत x अक्ष पर कृषि विकास स्तर और y अक्ष पर समन्वित ग्रामीण विकास स्तर प्रदर्शित किया गया है। इसमें 0 औसत से दायी ओर + Z मूल्य बांयी ओर –Z मूल्य हैं। इसी तरह y अक्ष पर उपर +Z मूल्य, नीचे –Z मूल्य दिखाया गया है। आरेख के अनुसार कृषि विकास और समन्वित ग्रामीण विकास का तीन क्षेत्रीय प्रतिरूप मिलता है।

कृषि विकास स्तर और समन्वित ग्रामीण विकास स्तर का उच्च सहसम्बन्ध

इस वर्ग में सम्मिलित विकास खण्डों में 9 विकास खण्ड हैं, जो जखनियां, मनिहारी, सादात, विरनो, गाजीपुर, मरदह, कासिमाबाद, वाराचवर, मुहम्मदाबाद आदि हैं। क्षेत्रीय रूप में इन विकास खण्डों की भौगोलिक स्थिति मध्यवर्ती और उत्तरी–पश्चिमी भाग में है। गाजीपुर जिला मुख्यालय से लेकर जखनिया, विरनो, मुहम्मदाबाद, वाराचवर तक उर्वर समतल भू–भाग है। सम्पूर्ण क्षेत्र सिंचाई के लिए नहरों और नलकूपों से युक्त हैं। इसीलिए इसमें दो फसलीय कृषि क्षेत्र अधिक है, बाजारों की भी सुविधा है। जिससे कृषि विकास उच्च स्तर का है। इसीलिए कृषि विकास स्तर और समन्वित ग्रामीण विकास स्तर में उच्च स्तरीय धनात्मक सहसम्बन्ध मिलता है। दोनों में सहसम्बन्ध गुणांक +0.847 है।

मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध

कृषि विकास का मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध केवल दो विकासखण्डों देवकली और जमानिया में पाया जाता है। क्योंकि देवकली में समन्वित ग्रामीण विकास स्तर का Z मूल्य–5.51 है कृषि विकास स्तर + 1.35 है, और जमानिया में कृषि विकास स्तर का Z मूल्य –.49 और समन्वित ग्रामीण विकास स्तर + 3.42 है। इन दोनों विकास खण्डों की स्थिति गंगा नदी के आर–पार है। जमानिया में बाढ़गस्त क्षेत्र होने के कारण कृषि विकास स्तर निम्न है। लेकिन कृष्येत्तर विकास उच्च स्तरीय है जबकि देवकली गंगा नदी के उत्तरी भाग में सटा हुआ है जहां कृष्येत्तर विकास निम्नस्तरीय है।

निम्न सहसम्बन्ध

इस वर्ग में कुल पांच विकास खण्ड सम्मिलित हैं। जिसमें सादात, करण्डा, भावरकोल, रेवतीपुर, भदौरा है। इनमें कृषि विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में निम्नस्तरीय सहसम्बन्ध है। सभी विकासखण्ड कृषि विकास और ग्रामीण विकास दोनों में पिछड़े हैं। इसका कारण दक्षिणी–पूर्वी भाग में बाढ़गस्त क्षेत्र, परिवहन साधनों का अभाव आदि है।

कष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में सम्बन्ध

अध्ययन क्षेत्र में कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में अन्तर्सम्बन्ध को प्रकीर्ण आरेख संख्या–3 पर प्रदर्शित किया गया है। सहसम्बन्ध के आधार पर इसके तीन क्षेत्रीय प्रतिरूप हैं।

उच्च सहसम्बन्ध

इसके अन्तर्गत कुल आठ विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जिसमें मनिहारी, सादात, विरनो, मरदह, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद और जमानिया आदि आते हैं। इनमें कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास दोनो में धनात्मक Z मूल्य हैं, विरनो, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद सर्वाधिक विकसित है, जबकि मरदह, मनिहारी, वाराचवर और जमानिया भी उच्च श्रेणी में है। इन क्षेत्रों में परिवहन मार्गों के नोडल केन्द्र गाजीपुर और मऊ से रेल सड़क सम्बन्ध आदि कारणों से कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास उच्च स्तरीय है।

मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध

इसके अन्तर्गत जखानिया, कासिमाबाद, सैदपुर और भावरकोल विकास खण्ड सम्मिलित है। इनमें समन्वित ग्रामीण विकास उच्च स्तर का और कृष्येत्तर विकास निम्न स्तर का है।

निम्न स्तरीय सहसम्बन्ध

इसके अन्तर्गत देवकली, करण्डा, रेवतीपुर और भदौरा सम्मिलित हैं। दक्षिणी–पूर्वी क्षेत्र में स्थित ये विकास खण्ड बाढ़ग्रस्त क्षेत्र, विरल जनसंख्या और परिवहन मार्ग जाल के अभाव के कारण कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास दोनों निम्न स्तरीय रूप से सम्बन्धित है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में कृष्येत्तर विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में भी उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध 0.841 है।

कृषि विकास एवं कृष्येत्तर विकास में सहसम्बन्ध

गाजीपुर जनपद में समन्वित ग्रामीण विकास का आधार मुख्य रूप से कृषि विकास स्तर हैं। लेकिन कृषि विकास को आधार देने वाले कृष्येत्तर कार्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान है इसीलिए कृषि विकास और कृष्येत्तर विकास में भी सम्बन्ध ज्ञात किया गया है। इसमें सहसम्बन्ध गुणांक +.498 है, जो निम्न सहसम्बन्ध का द्योतक है। लेकिन क्षेत्रीय रूप में इसका विश्लेषण आरेख संख्या–4 में किया गया हैं। इसके अनुसार सहसम्बन्ध के तीन क्षेत्रीय प्रतिरूप हैं।

क– इसके अन्तर्गत विरनो, सादात, मरदह, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद और वाराचवर आते हैं। सामान्य रूप से दोनों चरों में उच्च सहसम्बन्ध मिलता है। भौगोलिक रूप में ये सभी विकास खण्ड गाजीपुर मुख्यालय से लेकर के उत्तरी मध्यवर्ती भाग में फैले हैं, यहां कृषि के लिए सिंचाई, उर्वर मिट्टी, बाजार केन्द्र आदि सुविधायें हैं तथा उसी के अनुरूप मार्ग संगम केन्द्रों विभिन्न बाजारों में कृष्येत्तर कार्यों का भी विकास अधिक हुआ है। इसके अन्तर्गत दोनो चरों के Z मूल्य धनात्मक हैं।

ख– मध्यम स्तरीय सह सम्बन्ध के अन्तर्गत सम्मिलित विकासखण्डों में सैदपुर, जमानिया, कासिमाबाद, जखनिया, देवकली और भावरकोल हैं। इनमें कृषि विकास स्तर अपेक्षाकृत उच्च है और कृष्येत्तर विकास निम्न हैं। इसीलिए दोनों में मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध मिलता है।

ग– निम्न स्तरीय सहसम्बन्ध के अन्तर्गत करण्डा, रेवतीपुर और भदौरा विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहां दोनों चरों में निम्न स्तरीय सहसम्बन्ध हैं। क्योंकि दोनों चर पिछड़े हुए हैं।

अवस्थापनात्मक विकास एवं कृषि विकास में सम्बन्ध

अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर जनपद में अवस्थपनात्मक विकास ने यहां के अर्थतन्त्र को प्रभावित किया है। पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि संसाधनों के शोषण के लिए मनुष्य अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास करता है। क्षेत्रीय रूप में अर्थतन्त्र के विभिन्न आयामों और अवस्थापनात्मक तत्वों के मध्य सहसम्बन्धों की मात्रा के आधार पर अर्थतन्त्र में आरेख सं0–5 से क्षेत्रीय प्रतिरूप को समझा जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं।

क– इसके अन्तर्गत 6 विकास खण्ड सम्मिलित हैं, जो गाजीपुर, जखानिया, मनिहारी, मरदह, देवकली, मुहम्मदाबाद हैं। क्षेत्रीय रूप में इनकी भौगोलिक स्थिति गाजीपुर से उत्तर–पश्चिम और दक्षिण में देवकली तक है, इसमें अवस्थापनात्मक विकास और कृषि विकास में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध है। यह क्षेत्र विभिन्न सेवा केन्द्रों, बाजार केन्द्रों से भरा हुआ है। इसीलिए अवस्थापना विकास यहां उच्च स्तर का है, जबकि सिंचाई सुविधा से युक्त उर्वर कृषि भूमि भी है जो उच्च कृषि विकास के लिए उत्तरदायी है।

ख– अवस्थापना विकास और कृषि विकास में मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध विरनो, कासिमाबाद, वाराचवर, सादात और जमानिया विकासखण्डों में मिलता है। यहां विरनों, जमानिया और वाराचवर में उच्च स्तरीय कृषि विकास, सादात, वाराचवर में अवस्थापना विकास भी उच्च स्तर का है। इसीलिए दोनो चरों में मध्यम स्तरीय सहसम्बन्ध मिलता है।

ग– निम्न स्तरीय सहसम्बन्ध वाले सैदपुर, करण्डा, रेवतीपुर और भदौरा दो विकास खण्ड दक्षिणी–पूर्वी भाग में है। जहां कृषि विकास और अवस्थापना विकास दोनों निम्न है।

अवस्थापनात्मक विकास और कृष्येत्तर विकास

अध्ययन क्षेत्र में अवस्थापना विकास और कृष्येत्तर विकास दोनों में सम्बन्ध की व्याख्या करने से यह स्पष्ट होता है कि सहसम्बन्ध की मात्रा क्षेत्रीय रूप में अलग–अलग है। सैद्धान्तिक रूप में अवस्थापना तत्वों के वितरण और कृष्येत्तर विकास में कुछ धनात्मक सह सम्बन्ध होना चाहिए लेकिन क्षेत्रीय भू–विन्यास और आर्थिक विकास के आधार पर कहीं–कहीं इनमें विचलन पाया जाता है। आरेख संख्या–6 से दोनों में सह सम्बन्ध के निम्न प्रतिरूप ज्ञात होते हैं–

क– इसके अन्तर्गत सम्मिलित विकास खण्ड गाजीपुर, मोहम्मदाबाद, मनिहारी, जमानिया, मरदह और भावरकोल हैं। इन सभी विकासखण्डों में अवस्थापना विकास और कृष्येत्तर विकास दोनों में औसत से अधिक सह सम्बन्ध मिलता है। यह सारे विकास खण्ड क्षेत्रीय रूप में गाजीपुर से उत्तर स्थित है। दक्षिण में जमानियां भी इसी के अन्तर्गत है। परिवहन जाल और सघन जनसंख्या के कारण यहां अवस्थापना तत्वों और कृष्येत्तर विकास का उच्च स्तर मिलता है।

ख– इस वर्ग में सम्मिलित विकासखण्डों में जखनियां, सादात, देवकली, विरनो, सैदपुर, वाराचवर है। यह सभी क्षेत्र के मध्यवर्ती पश्चिमी भाग में स्थित है। जहां अवस्थापना तत्वों और कृष्येत्तर विकास में मध्यम स्तरीय सम्बन्ध मिलता है। मुख्य रूप से देवकली जखनियां विरनो में कृष्येत्तर विकास अधिक है, जबकि सैदपुर, सादात और बाराचवर में अवस्थापना विकास अधिक है।

ग– उपरोक्त दोनों चरों में निम्नस्तरीय सह सम्बन्ध के अन्तर्गत करण्डा, कासिमाबाद, रेवतीपुर और भदौरा सम्मिलित है। अधिकतर बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र और विरल जनसंख्या के कारण अवस्थापना विकास और कृष्येत्तर विकास दोनों निम्न स्तरीय सम्बन्ध के हैं।

अवस्थापना विकास एवं समन्वित ग्रामीण विकास में सम्बन्ध

अर्थतन्त्र के विभिन्न प्रखण्डों कृषि विकास और कृष्येत्तर विकास में अवस्थापना तत्वों के योगदान का मूल्यांकन करने के बाद अवस्थापना विकास और समन्वित ग्रामीण विकास में सम्बन्धों के क्षेत्रीय प्रतिरूप का आरेख संख्या–7 से विश्लेषण किया जा सकता है जो निम्नलिखित प्रकार से है–

सर्वोच्च सह सम्बन्ध

इसके अन्तर्गत सम्मिलित विकास खण्डों में जखनिया, मनिहारी, मरदह, गाजीपुर, मोहम्मदाबाद और जमानियां प्रमुख है। यहां अवस्थापना विकास और ग्रामीण विकास दोनों में सम्बन्ध उच्च स्तर का है। उल्लेखनीय है कि इन विकास खण्डों में कृषि विकास और कृष्येत्तर विकास भी उच्च स्तर का मिलता है–

ख– अवस्थापना तत्वों और समन्वित ग्रामीण विकास के अन्तर्गत मध्यम स्तरीय सह सम्बन्ध सादात, सैदपुर, देवकली, विरनो, बारचवर और भावर कोल में है। इन विकास खण्डों का भौगोलिक विस्तार अधिकतर उत्तर पूर्वी और दक्षिण पूर्वी भाग में है। जहां देवकली, विरनों में अवस्थापनात्मक विकास अधिक हुआ है, जबकि सादात, सैदपुर, बाराचवर में समन्वित ग्रामीण विकास अधिक है

ग– इसके अन्तर्गत करण्डा, रेवतीपुर, भदौरा विकास खण्ड आते हैं। यहां अवस्थापना तत्व और समन्वित ग्रामीण विकास दोनो कम है। इसलिए यहां निम्न स्तरीय सह सम्बन्ध मिलता है।

इस तरह अवस्थापनात्मक तत्व और ग्रामीण विकास के अन्तर्सम्बन्ध का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि अवस्थापनात्मक विकास ने समन्वित ग्रामीण विकास और उसके विभिन्न आयामों को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि विकास खण्ड वार जिन क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक विकास के धनात्मक z मूल्य हैं। उन क्षेत्रों समन्वित ग्रामीण विकास के भी धनात्मक z मूल्य हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अवस्थापना तत्वों के विकास ने समन्वित ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित किया है। दोनों के प्रकीर्ण आरेख से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है कि क्षेत्र के उत्तरी–मध्यवर्ती

और उत्तरी–पूर्वी भागों में अवस्थापना विकास उच्च स्तर का है और समन्वित ग्रामीण विकास भी उच्च स्तर का है। सामान्य रूप में क्षेत्र के दक्षिण पूर्वी भागों में अवस्थापना विकास निम्न स्तर का है, तो समन्वित ग्रामीण विकास भी निम्न स्तर का है। इसलिए दोनों चरों के बीच उच्च सह सम्बन्ध मिलता है।

प्रस्तुत अध्ययन को और अधिक पुष्ट करने के लिए समन्वित ग्रामीण विकास के आयामों कृषि विकास और कृष्येत्तर विकास तथा अवस्थापना विकास के बीच अर्न्तसम्बन्ध को ज्ञात किया गया है। इससे स्पष्ट होता है अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी मध्यवर्ती भागों में कृषि विकास उच्च स्तर का मिलता है, तो अवस्थापनात्मक विकास भी उच्च स्तर का मिलता है। यही हाल कृष्येत्तर विकास स्तर का है। इसमें भी उत्तरी मध्यवर्ती भागों में कृष्येत्तर विकास उच्च स्तरीय है जो अवस्थापना तत्वों के उच्च स्तरीय विकास का परिणाम है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास आर्थिक विकास का आधार है क्योंकि आर्थिक विकास उपलब्ध संसाधनों पर आधारित होता है लेकिन आर्थिक विकास हेतु यह संसाधन अनिवार्य नहीं है बल्कि अवस्थापनात्मक विकास के बाद ही संसाधनों द्वारा आर्थिक विकास सम्भव होता है अर्थात संसाधन आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है लेकिन अवस्थापनात्मक विकास अनिवार्य है।[11] वर्तमान अध्ययन क्षेत्र के संदर्भ में यह सिद्ध हो गया है। यह स्पष्ट है कि विभिन्न प्रकार के अवस्थापना तत्व अध्ययन क्षेत्र में समान रूप से विकसित हुए हैं और इसी के अनुकूल समन्वित ग्रामीण विकास भी घटित हुआ है। इससे यह परिकल्पना पुष्ट होती है कि आर्थिक और सामाजिक अवस्थापना तत्व क्षेत्रीय रूप में समान रूप से विकसित होते हैं और इसी के आधार पर ग्रामीण विकास प्रतिरूप भी निर्धारित होता है।

अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अवस्थापनात्मक विकास विभिन्न प्रकार के विकासात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करता है। इसीलिए क्षेत्र में अवस्थापनात्मक विकास जहां–जहां अधिक हुआ है, वहीं ग्रामीण विकास भी अधिक हुआ है।

अंत टिप्पणी

1. *Boserup, Ester (1965): The Conditions of Economic Growth: The Economics of Agrarian Change under Population Pressure, Chicago.*
2. *Castells, Jen H. (1996): Potential Hypothesis and Crop production: Annals of the Association of American Geographers Vol. 66, No. 1, 92-101.*
3. *Mishra, R.P. (1968): Diffusion of Agricultural Innovations, University of Mysore.*
4. *Mishra, R.P. (1975): The Process of Regional Development, Theoretical Foundation in Regional development Planning in India eds. R.P. Mishra, Vikas Pub. House, N. Delhi.*
5. *सिंह मंगला (1981) : जनपद आजमगढ़ (उ0प्र0) में ग्रामीण अधिष्ठान का रूपान्तरण, एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।*
6. *राव, बी0एल0एस0पी0 (1964) : Rural Development and Organisation.*
7. *Arora, R.C. (1979): Integrated Rural Development, S.Chand Company Ltd. New Delhi.*
8. *Mishra, R.P. (1978): Regional Planning and National Development, Vikas Publication New Delhi.*
9. *Singh L.R. (1986): Regional Planning & Development, Thinkers, Allahabad.*
10. *Desai, B. (1988) : Rural Development : Issues and Problems Vol 1 Himalaya Publication House, Bombay.*
11. *Ullman, E.L. (1960) : Geographic Theories and Under Developed Areas in Ginsburg's (ed.) Essays on Geography and Economics Development, University of Chicago Paper 62- P-5.*

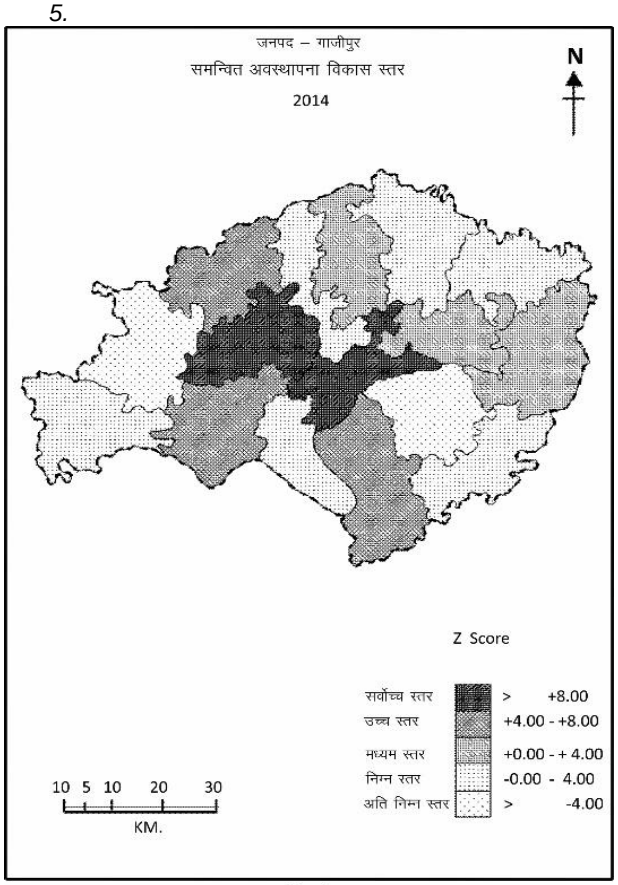

Fig. 1

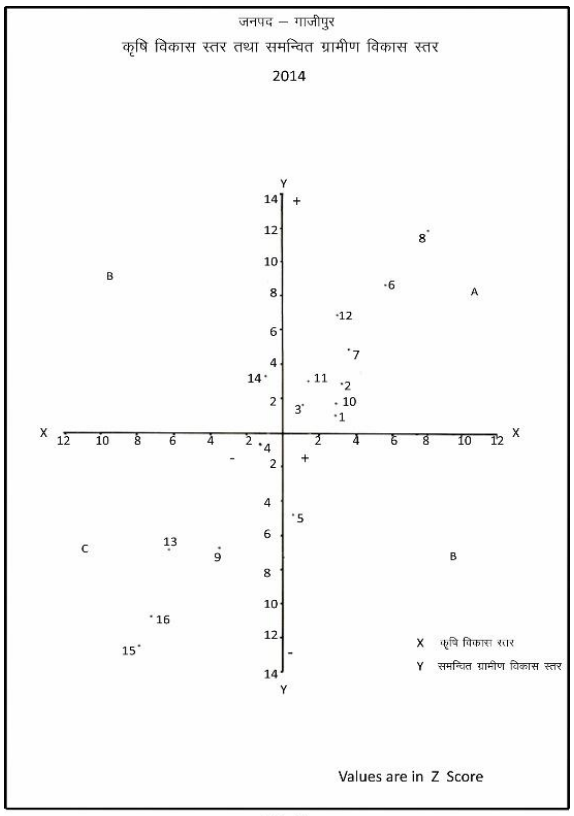

Fig. 2

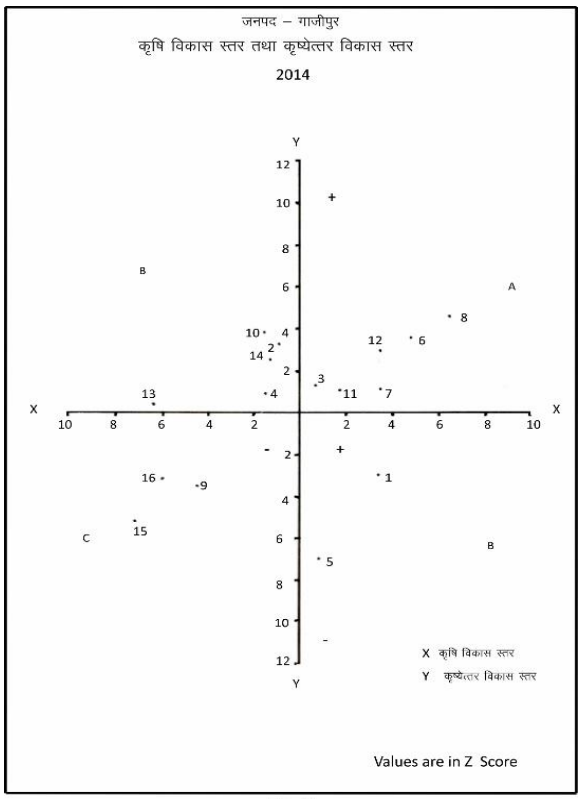

Fig. 4

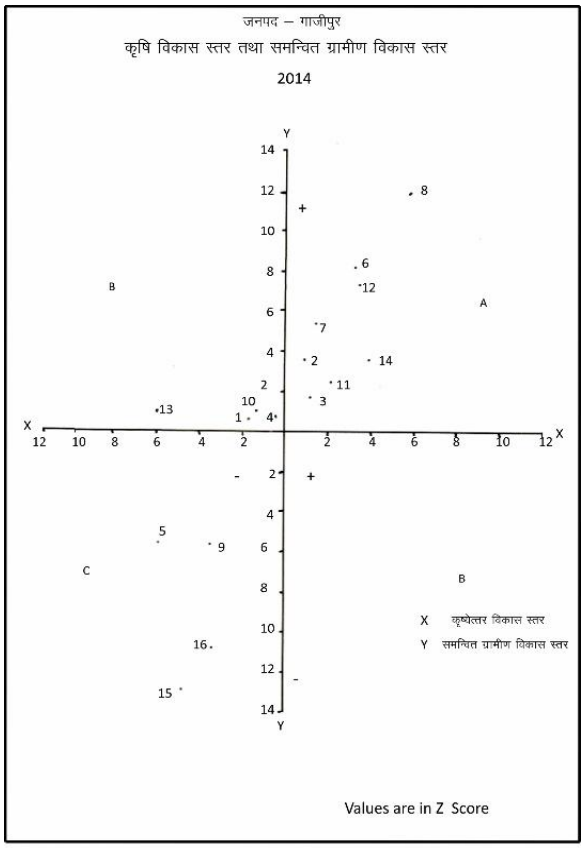

Fig. 3

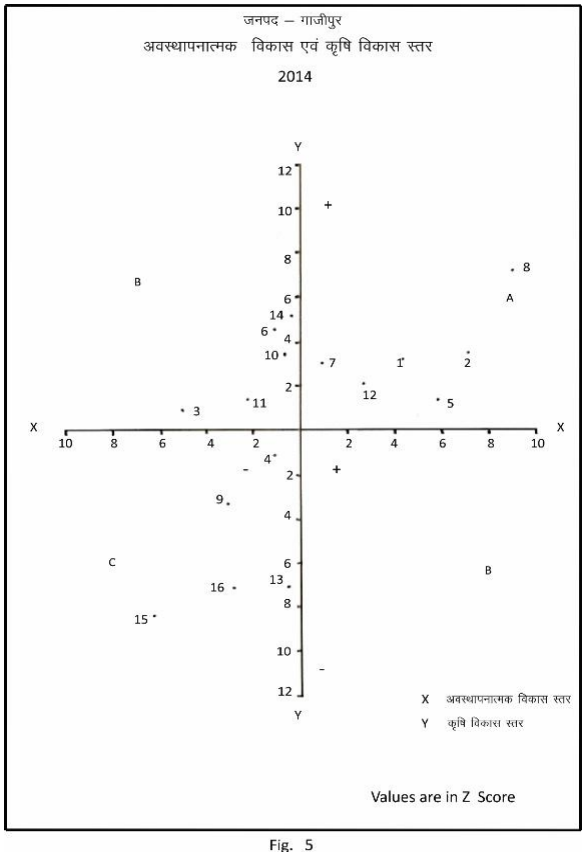

Fig. 5

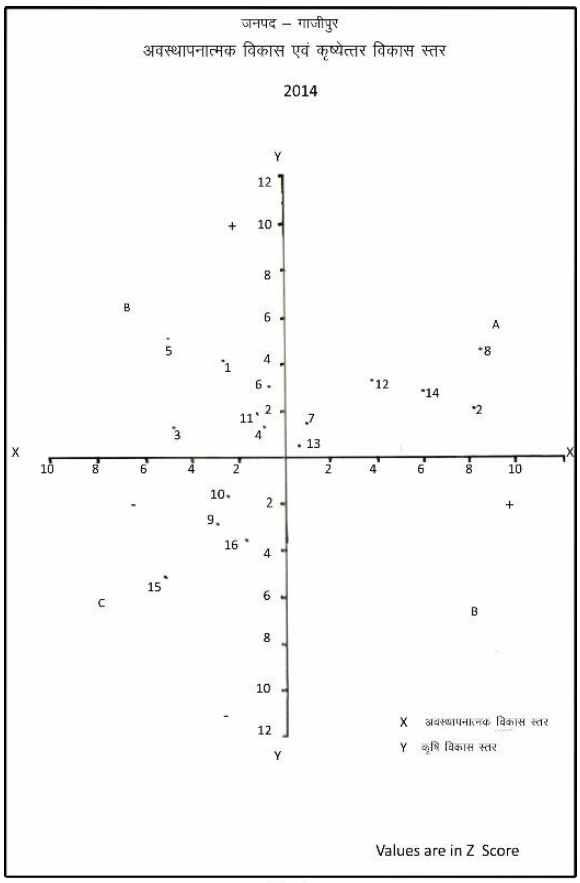
जनपद – गाजीपुर
अवस्थापनात्मक विकास एवं कृष्योत्तर विकास स्तर
2014
X अवस्थापनात्मक विकास स्तर
Y कृषि विकास स्तर
Values are in Z Score

Fig. 6

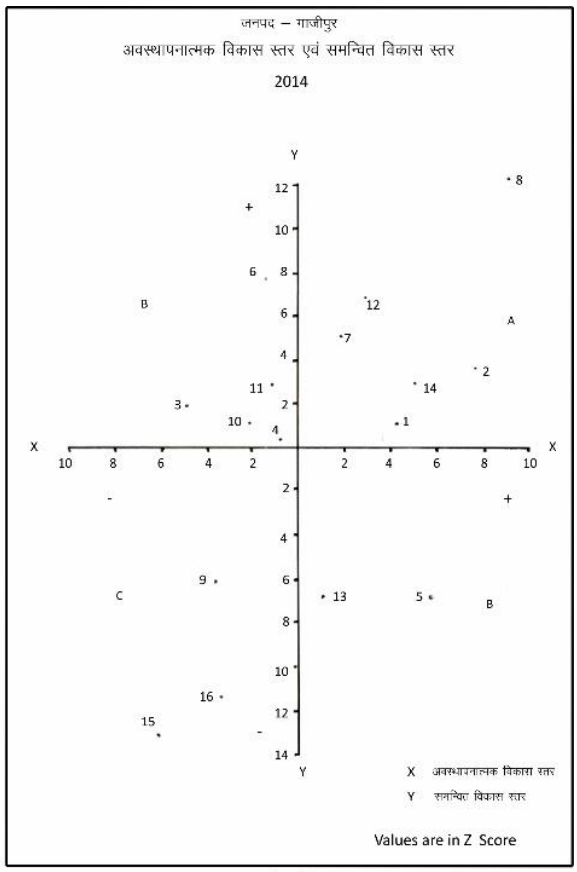
जनपद – गाजीपुर
अवस्थापनात्मक विकास स्तर एवं समन्वित विकास स्तर
2014
X अवस्थापनात्मक विकास स्तर
Y समन्वित विकास स्तर
Values are in Z Score

Fig. 7